INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
( Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal )
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 8.031 (SJIF 2025)

# एनईपी-2020 के संदर्भ में बच्चों में मूल्यों के विकास की प्रक्रिया: सिद्धांत, रणनीतियाँ और शिक्षण पद्धतियाँ

# (Process of Inculcating Values in Children in the Context of NEP-2020: Principles, Strategies and Teaching Methods)

**पवन सोनल**
शोधार्थी,
राजनीति विज्ञान विभाग,
जय नारायण व्यास विश्विद्यालय,
जोधपुर (राजस्थान, भारत)

**मनोज काक**
शिक्षक,
राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय,
बिरामी-पाली (राजस्थान, भारत)

**DOI No.** 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/09.2025-13388138/IRJHIS2509006

***सारांश:***

*एनईपी-2020 के संदर्भ में, यह दस्तावेज़ बच्चों में मूल्यों के विकास पर केंद्रित है, जिसमें चरित्र निर्माण, नैतिकता और सामाजिक जिम्मेदारी पर जोर दिया गया है । यह नीति बच्चों के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करने के लिए नैतिक और भावनात्मक बुद्धिमत्ता के समावेश को आवश्यक मानती है । दस्तावेज़ में मूल्य शिक्षा के लिए तीन प्रमुख सैद्धांतिक दृष्टिकोणों - कॉग्निटिव, व्यवहारवादी (Behavioral) और मानवतावादी (Humanistic) - का उल्लेख है, जो बच्चों में नैतिक समझ, व्यवहार और आंतरिक प्रेरणा को विकसित करते हैं।इसमें मूल्य विकास के लिए कई रणनीतियाँ और शिक्षण पद्धतियाँ बताई गई हैं, जैसे पारिवारिक और सामाजिक वातावरण का प्रभाव, अनुभवात्मक शिक्षण, खेल, नाटक, और डिजिटल साधनों का सही उपयोग । यह दस्तावेज़ आधुनिकता, तकनीकी प्रभाव, और पारिवारिक संरचना में बदलाव जैसी चुनौतियों पर भी प्रकाश डालता है। अंत में, शिक्षकों के प्रशिक्षण, पाठ्यक्रम में मूल्य शिक्षा को अनिवार्य बनाने और अभिभावकों की भागीदारी सुनिश्चित करने जैसे सुझाव दिए गए हैं।*

***बीज शब्द (Keywords):*** *एनईपी-2020, मूल्य शिक्षा, बच्चों का विकास, नैतिक मूल्य, शिक्षण पद्धतियाँ, सैद्धांतिक दृष्टिकोण, चुनौतियाँ, रणनीतियाँ, सामाजिक जिम्मेदारी, सर्वांगीण विकास।*

## 1. प्रस्तावना (Introduction) :

मूल्य मानव जीवन के उन आदर्शों और मान्यताओं का समूह हैं, जो व्यक्ति के व्यवहार, निर्णय, और सोच को दिशा देते हैं। ये सामाजिक, नैतिक, सांस्कृतिक, और धार्मिक संदर्भों में विकसित होते हैं और किसी भी समाज की नींव होते हैं। बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में मूल्यों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है क्योंकि बाल्यावस्था से ही यदि बच्चे में सही और सकारात्मक मूल्य स्थापित हो जाएं, तो वह एक संतुलित, जिम्मेदार, और संवेदनशील नागरिक के रूप में विकसित होता है। बच्चों में मूल्य शिक्षा का उद्देश्य न केवल उनके आचरण को बेहतर बनाना है, बल्कि उन्हें एक ऐसे नागरिक के रूप में तैयार करना भी है जो समाज की उन्नति में योगदान दे सके।

समाज में सकारात्मक मूल्यों के विकास का उद्देश्य व्यापक है। यह केवल व्यक्तिगत स्तर तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक सद्भाव, समानता, सहयोग, और मानवता की भावना को बढ़ावा देने का माध्यम भी है। जब बच्चे नैतिकता, सहिष्णुता, न्याय, ईमानदारी जैसे गुणों को आत्मसात करते हैं, तो वे समाज में शांति और विकास के स्तंभ बनते हैं। एक ऐसे युग में जहाँ तकनीकी प्रगति के साथ-साथ सामाजिक असमानताएँ, नैतिक पतन, और सामजिक तनाव बढ़ रहे हैं, वहाँ मूल्य शिक्षा की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। यह बच्चों को न केवल सही और गलत का बोध कराती है, बल्कि उन्हें जिम्मेदार और संवेदनशील व्यक्ति बनने की दिशा में प्रेरित करती है।

भारत सरकार ने शिक्षा क्षेत्र में क्रांतिकारी सुधार लाने के उद्देश्य से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP-2020) को लागू किया है, जो शिक्षा के हर पहलू को समग्रता से बदलने और सुधारने का एक व्यापक प्रयास है। NEP-2020 में मूल्य शिक्षा को एक केंद्रीय स्थान दिया गया है। इस नीति के अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण, नैतिकता और सामाजिक जिम्मेदारी का विकास भी होना चाहिए। NEP-2020 बच्चों में सकारात्मक मूल्यों के विकास को प्राथमिकता देती है ताकि वे न केवल अपने लिए बल्कि समाज और राष्ट्र के लिए भी जिम्मेदार नागरिक बन सकें।

NEP-2020 में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि शिक्षा प्रणाली को इस प्रकार डिजाइन किया जाना चाहिए कि वह बच्चों के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करे। इसमें कौशल विकास के साथ-साथ नैतिक और भावनात्मक बुद्धिमत्ता का समावेश आवश्यक है। नीति में कहा गया है कि स्कूलों में नैतिक शिक्षा, जीवन कौशल शिक्षा, और सह-अध्ययन गतिविधियाँ बच्चों के व्यक्तित्व और मूल्य विकास में सहायक हों। यह नीति पारंपरिक भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों और आधुनिक वैश्विक मानकों के बीच संतुलन स्थापित करती है, जिससे बच्चे अपने सांस्कृतिक परिवेश को समझते हुए विश्व नागरिक के रूप में भी विकसित हो सकें।

मूल्यों के विकास के लिए NEP-2020 में स्कूल, परिवार, और समुदाय के बीच घनिष्ठ सहयोग पर भी जोर दिया गया है। नीति यह मानती है कि केवल स्कूल में पढ़ाई से ही बच्चों में मूल्य विकसित नहीं हो सकते, परिवार और सामाजिक वातावरण भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं। इसलिए, शिक्षा नीतियों में सामुदायिक भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न पहलें प्रस्तावित की गई हैं। इसके अतिरिक्त, शिक्षक प्रशिक्षण को भी ऐसा बनाया गया है कि शिक्षक नैतिक और सामाजिक मूल्यों को प्रभावी ढंग से बच्चों तक पहुंचा सकें।

NEP-2020 की दृष्टि से मूल्य शिक्षा का स्थान इसलिए भी अहम है क्योंकि यह बच्चों को समसामयिक चुनौतियों का सामना करने के लिए मानसिक रूप से मजबूत बनाती है। आज का वैश्विक समाज तेजी से बदल रहा है, जहाँ नैतिक दुविधाएँ, सामाजिक असहिष्णुता, और प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ रही है। ऐसे परिवेश में बच्चों को सही दिशा देने के लिए मूल्य शिक्षा आवश्यक है। यह नीति बच्चों को न केवल अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करती है बल्कि उनके कर्तव्यों और सामाजिक दायित्वों का भी बोध कराती है। इस प्रकार, NEP-2020 में मूल्य शिक्षा को संपूर्ण शिक्षा का अभिन्न अंग माना गया है जो बाल्यावस्था से ही नैतिक चेतना का विकास करती है।

अतः, यह स्पष्ट है कि NEP-2020 ने बच्चों में मूल्यों के विकास को शिक्षा का मूल उद्देश्य बनाकर इसे एक समग्र और सशक्त शिक्षा व्यवस्था का अभिन्न हिस्सा बनाया है। इस नीति के क्रियान्वयन से उम्मीद की जाती है कि आने वाली पीढ़ी न केवल ज्ञान में प्रवीण होगी, बल्कि सामाजिक और नैतिक दृष्टि से भी मजबूत, संवेदनशील और जिम्मेदार होगी। इस प्रकार, बच्चों में मूल्यों का विकास न केवल व्यक्तिगत जीवन के लिए बल्कि देश और समाज की

प्रगति के लिए भी अत्यंत आवश्यक है।

2. **शोध का उद्देश्य** (Objectives of the Study) :

- बच्चों में मूल्य विकास के लिए NEP-2020 के प्रावधानों का अध्ययन
- मूल्य शिक्षा के लिए प्रभावी सिद्धांतों और रणनीतियों की पहचान
- शिक्षण पद्धतियों का विश्लेषण जो बच्चों में नैतिक और सामाजिक मूल्यों को बढ़ावा दें

3. **शोध प्रश्न** (Research Questions) :

- NEP-2020 में मूल्य शिक्षा को कैसे प्रस्तुत किया गया है?
- बच्चों में मूल्यों के विकास के लिए कौन-कौन से सिद्धांत प्रभावी हैं?
- किन शिक्षण रणनीतियों और पद्धतियों से मूल्य शिक्षा को सशक्त किया जा सकता है?

4. **सैद्धांतिक पृष्ठभूमि** (Theoretical Background) :

मूल्य शिक्षा का अध्ययन विभिन्न सैद्धांतिक दृष्टिकोणों पर आधारित होता है, जो बच्चों में नैतिकता, सामाजिक व्यवहार और व्यक्तित्व विकास को समझने में सहायता करते हैं। इस खंड में हम मूल्य शिक्षा के प्रमुख सिद्धांतों, बाल विकास और मूल्य आंतरण के मनोवैज्ञानिक पहलुओं तथा पूर्व के अध्ययन और मूल्य विकास के मॉडल का विश्लेषण करेंगे।

**1. मूल्य शिक्षा के प्रमुख सिद्धांत :**

मूल्य शिक्षा के क्षेत्र में तीन मुख्य सिद्धांत व्यापक रूप से स्वीकार्य हैं — संज्ञानात्मक (Cognitive), व्यवहारवादी (Behavioral) (Behavioral), और मानवतावादी (Humanistic) (Humanistic) दृष्टिकोण। ये सिद्धांत मूल्य शिक्षा की प्रक्रिया को समझने और प्रभावी शिक्षण विधियों के विकास में मार्गदर्शक होते हैं।

**संज्ञानात्मक (Cognitive) दृष्टिकोण :**

संज्ञानात्मक सिद्धांत यह मानता है कि मूल्य शिक्षा का मूल आधार व्यक्ति के सोचने और समझने की प्रक्रिया है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, बच्चे तब तक मूल्य विकसित नहीं कर पाते जब तक वे नैतिक विचारों को समझने और आत्मसात करने में सक्षम न हों। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक जीन पियाजे (Jean Piaget) ने नैतिक विकास के चरण बताए हैं, जिनमें बच्चों की नैतिक समझ उम्र के साथ परिपक्व होती है। पियाजे के अनुसार, छोटे बच्चे नियमों को सख्ती से पालन करते हैं (हेटेरोनोमस मोरलिटी), जबकि बड़े बच्चे नियमों को सामाजिक समझौते के रूप में देखते हैं (ऑटोनोमस मोरलिटी)। इसके अलावा, लॉरेंस कोल्बर्ग (Lawrence Kohlberg) ने नैतिक विकास के छह स्तर निर्धारित किए, जो नैतिक निर्णय लेने की क्षमता और नैतिक तर्क को विकसित करते हैं। संज्ञानात्मक दृष्टिकोण पर आधारित शिक्षा बच्चों को नैतिक समस्याओं का विश्लेषण करना, विभिन्न दृष्टिकोणों को समझना, और तर्कसंगत निर्णय लेना सिखाती है।

**व्यवहारवादी (Behavioral) दृष्टिकोण :**

व्यवहारवादी (Behavioral) सिद्धांत का केंद्र बिंदु व्यवहार (behavior) है। इसके अनुसार, मूल्य शिक्षा का उद्देश्य बच्चों के सकारात्मक व्यवहार को विकसित करना है। बी. एफ. स्किनर (B.F. Skinner) जैसे व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिकों ने सिखाया कि व्यवहार का विकास पुरस्कार और दंड के माध्यम से होता है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, अगर बच्चों को उचित व्यवहार के लिए प्रोत्साहित किया जाए और अनुचित व्यवहार को

सुधारा जाए, तो वे नैतिक व्यवहार सीख सकते हैं। उदाहरण स्वरूप, स्कूल में ईमानदारी, अनुशासन और सहानुभूति जैसे गुणों को बार-बार प्रोत्साहित करके उन्हें बच्चे के व्यवहार में शामिल किया जा सकता है। यह सिद्धांत शिक्षकों को व्यवहार सुधार के लिए विशिष्ट रणनीतियाँ अपनाने के लिए प्रेरित करता है।

**मानवतावादी (Humanistic) दृष्टिकोण :**

मानवतावादी (Humanistic) सिद्धांत मूल्य शिक्षा को एक समग्र और भावनात्मक प्रक्रिया मानता है। कार्ल रॉजर्स (Carl Rogers) और अब्राहम मास्लो (Abraham Maslow) जैसे विचारकों ने इसे विकसित किया। इस दृष्टिकोण के अनुसार, मूल्य विकास में व्यक्ति की आंतरिक भावना, स्व-प्रेरणा, और स्व-अनुभूति महत्वपूर्ण होती है। बच्चों को अपने आप को समझने, आत्मसम्मान विकसित करने, और दूसरों के प्रति सहानुभूति महसूस करने के अवसर प्रदान किए जाते हैं। यह दृष्टिकोण शिक्षा को बच्चों के समग्र विकास का माध्यम मानता है, जिसमें वे केवल नियमों का पालन नहीं करते, बल्कि अपने मूल्यों को आत्मसात कर उन्हें अपने जीवन में लागू करते हैं। मानवतावादी (Humanistic) दृष्टिकोण बच्चों को जिम्मेदारी, करुणा, और स्वायत्तता की ओर उन्मुख करता है।

**2. बाल विकास और मूल्य आंतरण के मनोवैज्ञानिक पहलू :**

बच्चों में मूल्य विकास उनकी संज्ञानात्मक, सामाजिक और भावनात्मक वृद्धि के साथ जुड़ा होता है। बाल विकास के मनोवैज्ञानिक अध्ययन यह बताते हैं कि मूल्य केवल बाहरी आदेश या अनिवार्य नियम नहीं होते, बल्कि वे बच्चे के मन और व्यवहार में गहराई से जुड़ते हैं।

**संज्ञानात्मक विकास :**

जैसे-जैसे बच्चों की सोचने-समझने की क्षमता बढ़ती है, वे नैतिक अवधारणाओं को भी बेहतर तरीके से समझने लगते हैं। प्रारंभ में बच्चे सही और गलत को केवल माता-पिता या शिक्षक के आदेश के अनुसार देखते हैं, लेकिन समय के साथ वे नैतिक कारणों और परिप्रेक्ष्य को समझने लगते हैं। यह समझ उन्हें नैतिक निर्णय लेने और जटिल सामाजिक स्थितियों में उचित व्यवहार करने में मदद करती है।

**सामाजिक प्रभाव :**

बच्चों के मूल्य विकास में परिवार, स्कूल, और समुदाय की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। परिवार ब का पहला सामाजिक संदर्भ होता है जहाँ वे अपने माता-पिता और अभिभावकों के व्यवहार से मूल्य सीखते हैं। मित्र समूह, शिक्षक, और सामाजिक माहौल भी मूल्य आंतरण में प्रभावी होते हैं। सामाजिक अधिग्रहण (socialization) प्रक्रिया के माध्यम से बच्चे विभिन्न सामाजिक नियम, संस्कार, और नैतिक मानदंड अपनाते हैं।

**भावनात्मक विकास :**

मूल्यों के विकास में सहानुभूति, संवेदना, और आत्मनियंत्रण जैसे भावनात्मक पहलू महत्वपूर्ण होते हैं। बच्चों को अपने और दूसरों के भावनाओं को समझने और उनका सम्मान करने की क्षमता विकसित करनी होती है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence) की वृद्धि बच्चों को विवादों को शांति से सुलझाने, सहयोग करने, और सामाजिक संबंध बनाए रखने में सक्षम बनाती है।

**मूल्य आंतरण की प्रक्रिया :**

मूल्य आंतरण की प्रक्रिया में बच्चे पर्यावरण से जानकारी ग्रहण करते हैं, उसका मूल्यांकन करते हैं और उसे अपने व्यक्तित्व में समाहित करते हैं। यह प्रक्रिया प्रत्यक्ष अनुकरण (modeling), सामाजिक प्रोत्साहन (social

reinforcement), और संवाद के माध्यम से होती है। बच्चों को जब वे सही व्यवहार को देखकर उसे अपनाते हैं और उसकी प्रशंसा पाते हैं, तो वे उस मूल्य को अपने जीवन का हिस्सा बना लेते हैं।

**3. पूर्व के अध्ययन और मूल्य विकास के मॉडल :**

मूल्य विकास पर अनेक शोध और मॉडल विकसित हुए हैं, जो इस क्षेत्र की गहराई को दर्शाते हैं। प्रमुख मॉडल निम्नलिखित हैं:

**कोल्बर्ग का नैतिक विकास मॉडल :**

लॉरेंस कोल्बर्ग ने नैतिक विकास को छह स्तरों में विभाजित किया है, जो तीन मुख्य चरणों में बंटे हैं: पूर्व-परंपरागत, पारंपरिक, और पोस्ट-परंपरागत। यह मॉडल दर्शाता है कि बच्चों और युवाओं की नैतिक समझ उम्र, अनुभव, और सामाजिक प्रभावों के साथ विकसित होती है। यह मॉडल मूल्य शिक्षा के पाठ्यक्रम तैयार करने में उपयोगी है क्योंकि यह शिक्षकों को बच्चों की नैतिक क्षमता के अनुसार शिक्षण विधि अपनाने में सहायता करता है।

**पियाजे का नैतिक विकास सिद्धांत :**

जीन पियाजे ने नैतिक विकास को दो मुख्य चरणों में बाँटा है — हेटेरोनोमस नैतिकता और ऑटोनोमस नैतिकता। पियाजे ने यह सिद्ध किया कि छोटे बच्चे नियमों को अविभाज्य मानते हैं, जबकि बड़े बच्चे सामाजिक समझौते और न्याय की धारणा विकसित करते हैं। यह सिद्धांत बच्चों की नैतिक शिक्षा को उनके विकास स्तर के अनुरूप डिजाइन करने में सहायक है।

**हॉफमैन का नैतिक संवेदना विकास मॉडल :**

मार्टिन हॉफमैन ने नैतिक संवेदना को भावनात्मक विकास से जोड़कर समझाया है। उनका मानना है कि सहानुभूति और भावनात्मक प्रतिक्रिया नैतिक आचरण का आधार हैं। बच्चों में सहानुभूति विकसित करना मूल्य शिक्षा का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य होना चाहिए।

**ब्रॉडरिक्स और मैकडोनाल्ड का सामाजिक अधिग्रहण मॉडल :**

यह मॉडल बच्चों के सामाजिक और नैतिक विकास को उनके सामाजिक परिवेश के प्रभाव के रूप में देखता है। इस मॉडल के अनुसार, बच्चे अपने परिवार, स्कूल, और सामाजिक समूहों से सीखते हैं और सामाजिक व्यवहार अपनाते हैं।

**पूर्व में हुए अध्ययन :**

पूर्व के अध्ययन इस विषय पर महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। कई शोधों में यह पाया गया है कि मूल्य शिक्षा तभी प्रभावी होती है जब इसे केवल शब्दों या पाठ्यपुस्तकों तक सीमित न रखकर, बल्कि अनुभवात्मक और सहभागी शिक्षण के माध्यम से बच्चों तक पहुँचाया जाए। डेविड (2010) ने अपने अध्ययन में उल्लेख किया कि सामाजिक गतिविधियाँ, कहानी कहने, नाटक और संवाद जैसे सक्रिय शिक्षण उपकरण बच्चों में नैतिक सिद्धांतों को समझने और आत्मसात करने में सहायक होते हैं। इसी प्रकार, सिंह और शर्मा (2015) ने परिवार की भूमिका को अत्यंत महत्वपूर्ण बताया है, क्योंकि प्रारंभिक वर्ष बच्चों के मूल्य निर्माण के लिए आधारभूत होते हैं। उनके अनुसार, माता-पिता का व्यवहार और पारिवारिक संस्कार बच्चों के नैतिक विकास पर गहरा प्रभाव डालते हैं। गुप्ता एवं कुमारी (2017) ने स्कूल आधारित मूल्य शिक्षा कार्यक्रमों का विश्लेषण करते हुए पाया कि नैतिक शिक्षा, कहानी, नाटक और सामाजिक गतिविधियाँ बच्चों में सहानुभूति, अनुशासन और सामाजिक जिम्मेदारी विकसित करने के लिए प्रभावी होती हैं। डिजिटल युग में मूल्य शिक्षा की चुनौतियों और संभावनाओं पर कुमार (2019) का शोध बताता है कि तकनीकी उपकरण और मीडिया सही दिशा में उपयोग किए जाने पर बच्चों के मूल्य विकास में सहायक

हो सकते हैं, बशर्ते उनका नियंत्रण एवं मार्गदर्शन सही हो। पाटिल एवं मोरे (2021) ने यह पाया कि पारंपरिक कक्षा शिक्षण की तुलना में सहभागी शिक्षण विधियाँ, जैसे समूह चर्चा, रोल प्लेइंग और समस्या-आधारित शिक्षण, बच्चों के मूल्य समझ और व्यवहार में स्थायी बदलाव लाती हैं। इसके अतिरिक्त, राज एवं देशमुख (2022) ने सामाजिक और भावनात्मक शिक्षा के माध्यम से बच्चों की सहानुभूति, आत्म-नियंत्रण और सामाजिक जागरूकता को बढ़ावा देने पर जोर दिया है, जो सकारात्मक मूल्य विकास के लिए अनिवार्य हैं। इन सभी शोधों से यह स्पष्ट होता है कि मूल्य शिक्षा का समग्र, सहभागी और अनुभवात्मक दृष्टिकोण ही बच्चों के नैतिक और सामाजिक विकास में सबसे प्रभावी होता है, जो NEP-2020 की दृष्टि से भी अनुकूल है।

मूल्य शिक्षा का सैद्धांतिक आधार विभिन्न दृष्टिकोणों और मॉडल से युक्त है जो बच्चों के संज्ञानात्मक, व्यवहारिक, और भावनात्मक विकास को समग्र रूप से समझने में सहायता करते हैं। NEP-2020 के संदर्भ में, इन सिद्धांतों और मॉडल को शिक्षा पद्धतियों में शामिल करना अत्यंत आवश्यक है ताकि बच्चे नैतिक, संवेदनशील, और जिम्मेदार नागरिक बन सकें। बाल विकास के मनोवैज्ञानिक पहलुओं को ध्यान में रखते हुए, मूल्य शिक्षा को अनुभवात्मक, संवादात्मक और सामाजिक संदर्भों में प्रभावी बनाया जाना चाहिए। पूर्व के शोध और मॉडल मूल्य शिक्षा की प्रभावशीलता बढ़ाने के लिए मार्गदर्शन करते हैं और नीति निर्माण तथा शिक्षण प्रथाओं के लिए उपयोगी हैं।

**5.राष्ट्रीय शिक्षा निति- 2020 में मूल्य शिक्षा :**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP-2020) में मूल्य शिक्षा को शिक्षा का एक अनिवार्य और केंद्रीय तत्व माना गया है। इसका उद्देश्य बच्चों के व्यक्तित्व के समग्र विकास को सुनिश्चित करना है, जिसमें नैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों का समावेश हो। नीति में बच्चों में सहिष्णुता, सम्मान, करुणा, और सामाजिक जिम्मेदारी जैसे गुणों के विकास पर बल दिया गया है। उदाहरण स्वरूप, नीति में सह-अध्ययन गतिविधियों जैसे सामूहिक खेल, कला, और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से सहयोग, नेतृत्व, और समानता के मूल्य सिखाने को प्राथमिकता दी गई है।

NEP-2020 में नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, और संवेदनशीलता संबंधी मूल्यों को शिक्षा का अभिन्न हिस्सा माना गया है। बच्चों को केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित न रखकर, उन्हें जीवन में व्यावहारिक मूल्यों से परिचित कराना आवश्यक समझा गया है। जैसे स्कूलों में 'सांस्कृतिक दिवस' मनाकर विभिन्न धर्मों, भाषाओं और संस्कृतियों के प्रति सम्मान और समावेशिता को बढ़ावा दिया जाता है, जिससे बच्चों में सामाजिक सद्भावना और सांस्कृतिक समझ विकसित होती है।

समावेशी और बहुआयामी शिक्षा में मूल्य विकास की भूमिका भी नीति में स्पष्ट की गई है। शिक्षा प्रणाली ऐसी होनी चाहिए जो सभी बच्चों, विशेषकर वंचित और अल्पसंख्यक वर्गों को समान अवसर प्रदान करे और उनमें सामाजिक समानता के मूल्य विकसित करे। उदाहरण के लिए, स्कूलों में समूह गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं जिनमें विभिन्न पृष्ठभूमि के बच्चे एक साथ मिलकर काम करते हैं, जिससे भेदभाव रहित सोच और एकजुटता की भावना को बढ़ावा मिलता है।

NEP-2020 स्कूल और समुदाय के समन्वय द्वारा मूल्य विकास को भी महत्वपूर्ण मानती है। परिवार, स्थानीय समुदाय, और स्कूल मिलकर बच्चों के नैतिक और सामाजिक विकास के लिए जिम्मेदार हैं। उदाहरण के तौर पर, स्कूलों में अभिभावकों की सहभागिता के साथ सामुदायिक सेवा कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जैसे स्थानीय पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता अभियान, या वृद्धों की सेवा, जिनमें बच्चे भाग लेकर सामाजिक जिम्मेदारी और सेवा भाव सीखते हैं।

बच्चों में मूल्य शिक्षा के विकास के लिए NEP-2020 अनुभवात्मक और सहभागी शिक्षण पर जोर देती है। उदाहरण के लिए, झूठ बोलने के दुष्परिणाम समझाने के लिए केवल नियम बताने की बजाय नाटक के माध्यम से इसे प्रस्तुत किया जाता है, जिससे बच्चे नैतिकता को अपने अनुभव से समझते हैं। सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ जैसे कहानी सुनाना, समूह चर्चा, और कविता पाठ बच्चों में ईमानदारी, सहानुभूति, और सम्मान के मूल्य विकसित करती हैं।

परिवार की भूमिका भी इस प्रक्रिया में महत्वपूर्ण है; माता-पिता अपने दैनिक व्यवहार से बच्चों को नम्रता और ईमानदारी का उदाहरण देते हैं। 'पारिवारिक दिवस' या 'समुदाय सेवा दिवस' जैसे कार्यक्रम बच्चों को परिवार और समुदाय के साथ जुड़ने का अवसर देते हैं। बहुसांस्कृतिक समझ बढ़ाने के लिए 'सांस्कृतिक उत्सव' जैसे आयोजन किए जाते हैं, जहाँ बच्चे विभिन्न संस्कृतियों और त्योहारों को समझकर सहिष्णुता का भाव विकसित करते हैं।

डिजिटल युग को ध्यान में रखते हुए, NEP-2020 डिजिटल माध्यमों का सकारात्मक उपयोग कर बच्चों को नैतिकता सिखाने पर भी जोर देती है। शिक्षक ऑनलाइन वीडियो, एनीमेशन, और साइबर एथिक्स के जरिए बच्चों को सही-गलत की समझ और इंटरनेट पर सम्मानपूर्वक व्यवहार करना सिखाते हैं। इसके साथ ही जीवन कौशल शिक्षा जैसे निर्णय लेना, समस्या सुलझाना, और भावनाओं को नियंत्रित करना बच्चों में सहानुभूति और आत्म-नियंत्रण जैसे मूल्य विकसित करता है। उदाहरण स्वरूप, क्लासरूम में 'इमोशनल इंटेलिजेंस' के सत्र आयोजित कर बच्चों को गुस्सा आने पर शांत रहने और दूसरों की भावनाओं को समझने की शिक्षा दी जाती है।

इस प्रकार, NEP-2020 में मूल्य शिक्षा केवल अकादमिक ज्ञान तक सीमित नहीं रहकर, इसे सक्रिय, सहभागी और जीवन के वास्तविक अनुभवों से जोड़ती है। स्कूल, परिवार और समुदाय के समन्वय से बच्चे नैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों को गहराई से समझकर अपने जीवन में अपनाते हैं, जिससे वे जिम्मेदार और संवेदनशील नागरिक बनते हैं।

**6. बच्चों में मूल्यों के विकास के लिए रणनीतियाँ :**

**1. पारिवारिक और सामाजिक वातावरण का प्रभाव :**

परिवार बच्चों का पहला विद्यालय होता है, जहाँ वे मूल्यों की नींव सीखते हैं। उदाहरण के लिए, यदि माता-पिता नियमित रूप से बच्चों को दूसरों की मदद करने, बुजुर्गों का सम्मान करने, और सच्चाई बोलने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, तो बच्चे ये गुण सहज ही ग्रहण कर लेते हैं। जैसे, एक बच्चा अपने घर पर देखता है कि उसके माता-पिता पड़ोसी की सहायता करते हैं या जरूरतमंदों को भोजन देते हैं, तो वह भी ऐसी आदतें अपनाता है। सामाजिक रूप से, बच्चे जब अपने दोस्तों के साथ मिलकर समूह में काम करते हैं, तो वे सहयोग, सम्मान, और सौहार्द्र जैसे मूल्य सीखते हैं। उदाहरण के तौर पर, खेल के मैदान में टीम भावना विकसित करना।

**2. पाठ्यक्रम और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ :**

विद्यालय में नैतिक कहानियाँ, जीवनी, और सामाजिक विज्ञान के विषयों में नैतिकता को शामिल किया जाता है। उदाहरण के लिए, पाठ्यपुस्तक में 'सच्चाई का महत्व' पर कहानी पढ़ाने के बाद बच्चों से उस पर चर्चा कराई जाती है। इसके अतिरिक्त, सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों जैसे वृक्षारोपण, स्वच्छता अभियान या सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भागीदारी से बच्चे 'पर्यावरण संरक्षण' और 'सामाजिक एकता' के मूल्य सीखते हैं। जैसे 'स्वच्छता अभियान' में बच्चों द्वारा कक्षा या स्कूल परिसर की सफाई करना, उन्हें जिम्मेदारी का भाव सिखाता है।

**3. अनुभवात्मक और सहभागी शिक्षण :**

मूल्य शिक्षा तभी प्रभावी होती है जब बच्चे सीधे अनुभव के माध्यम से सीखें। उदाहरण के लिए, स्कूल में 'ईमानदारी' पर एक नाटक कराया जाता है, जिसमें बच्चे झूठ बोलने के परिणामों को समझते हैं। या 'सहायता' विषय पर समूह चर्चा कर बच्चे अनुभव साझा करते हैं कि किस प्रकार उन्होंने दूसरों की मदद की। इसी तरह, समस्या-आधारित शिक्षण में बच्चों को ऐसे हालात दिए जाते हैं जहाँ वे नैतिक निर्णय लें, जिससे उनकी सोच और मूल्यबोध विकसित होता है।

**4. खेल-कूद, कहानी, नाटक, और कला के माध्यम से मूल्य सिखाना :**

खेलों में बच्चे टीम भावना, अनुशासन, और सहयोग सीखते हैं। जैसे क्रिकेट या कबड्डी खेलते समय बच्चे जीत-हार को सम्मान देना सीखते हैं। कहानियाँ जैसे पंचतंत्र की कथाएँ जैसे 'सियार और कौआ' बच्चों को चतुराई, धैर्य, और ईमानदारी के बारे में सिखाती हैं। नाटक के माध्यम से, बच्चे विभिन्न सामाजिक भूमिकाएँ निभाकर सहानुभूति और सामाजिक जिम्मेदारी समझते हैं। उदाहरण स्वरूप, 'पर्यावरण संरक्षण' विषय पर नाटक में बच्चे वृक्षों की सुरक्षा के महत्व को दर्शाते हैं। कला में, चित्रकारी के माध्यम से बच्चे अपने विचार और भावनाएँ व्यक्त करते हुए धैर्य और एकाग्रता का विकास करते हैं।

**5. डिजिटल और तकनीकी साधनों का सही उपयोग :**

डिजिटल युग में बच्चों को इंटरनेट और तकनीकी उपकरणों का सही उपयोग सिखाना आवश्यक है। उदाहरण के लिए, शिक्षक बच्चों को ऑनलाइन वीडियो के जरिए 'साइबर एथिक्स' जैसे विषय समझाते हैं, जहाँ वे सोशल मीडिया पर सम्मानपूर्वक व्यवहार करने और झूठी सूचनाओं से बचने के नियम सीखते हैं। इसके अलावा, बच्चों को डिजिटल प्लेटफार्म पर मिल-जुलकर परियोजनाएँ बनाने और संवाद स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, जिससे वे सहयोग और डिजिटल सम्मान के मूल्य सीखते हैं।

इन रणनीतियों के माध्यम से बच्चे केवल शैक्षिक ज्ञान ही नहीं बल्कि जीवन में सफल और जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए आवश्यक नैतिक और सामाजिक मूल्य भी विकसित करते हैं। NEP-2020 के अनुसार, परिवार, स्कूल, और तकनीकी माध्यमों का सही संयोजन बच्चों के मूल्य विकास में गहरा और स्थायी प्रभाव डालता है।

7. **शिक्षण पद्धतियाँ** (Teaching Methods) :

बच्चों में मूल्यों के विकास के लिए प्रभावी शिक्षण पद्धतियों का चयन और उपयोग अत्यंत आवश्यक है। NEP-2020 भी ऐसी शिक्षण तकनीकों को प्रोत्साहित करती है जो बच्चों को सक्रिय रूप से सोचने, समझने, और व्यवहार में मूल्य लाने के लिए प्रेरित करें। नीचे कुछ प्रमुख शिक्षण पद्धतियाँ दी गई हैं जो मूल्य शिक्षा में सहायक

होती हैं:

**शिक्षण पद्धतियों के लिए कक्षा संचालन की विस्तृत रूपरेखा** (Detailed Teaching Plan) :

**1. प्रेरणा और मॉडलिंग के माध्यम से मूल्य शिक्षा :**

**उद्देश्य :** बच्चों को नैतिक व्यवहार की प्रेरणा देना और मॉडलिंग के माध्यम से मूल्य सिखाना।

**प्रक्रिया :**

- शिक्षक स्वयं ईमानदारी, सम्मान, और सहयोग का व्यवहार कक्षा में प्रदर्शित करें।
- बच्चों को ऐसे उदाहरण दें जहाँ नैतिकता का पालन करके सफलता मिली हो।
- कक्षा में 'रोल मॉडल' पर चर्चा कर बच्चों से उनके पसंदीदा आदर्श व्यक्तित्व के बारे में पूछें।
- बच्चों को दैनिक जीवन में अच्छे व्यवहार को अपनाने के लिए प्रेरित करें।

**संसाधन:** कहानियाँ, जीवन से उदाहरण, वीडियो क्लिप।

**मूल्यांकन:** बच्चों से पूछें कि उन्होंने किन स्थितियों में शिक्षक के व्यवहार को अपनाया।

**2. समस्या-आधारित शिक्षण (Problem-Based Learning) :**

**उद्देश्य:** बच्चों में समस्या सुलझाने और नैतिक निर्णय लेने की क्षमता विकसित करना।

**प्रक्रिया :**

- कक्षा में छोटे समूह बनाएं और प्रत्येक समूह को एक नैतिक समस्या या सामाजिक मुद्दा दें (जैसे – 'स्कूल में झूठ बोलना', 'पर्यावरण प्रदूषण')।
- बच्चों से चर्चा कर समाधान निकालने को कहें।
- प्रत्येक समूह अपने समाधान कक्षा के सामने प्रस्तुत करे।
- शिक्षक समाधान की समीक्षा कर सकारात्मक और सुधारात्मक सुझाव दें।

**संसाधन:** केस स्टडी, समस्या विवरण, चर्चा के लिए प्रश्न।

**मूल्यांकन:** समूह की प्रस्तुति और समाधान की गुणवत्ता।

**3. सहकर्मी शिक्षण** (Peer Learning) :

**उद्देश्य:** बच्चों में सहयोग और समझ विकसित करना।

**प्रक्रिया:**

- बच्चों को जोड़ी या छोटे समूहों में बाँटें।
- प्रत्येक समूह को नैतिक मूल्य या सामाजिक विषय पर चर्चा करने के लिए कहें।
- बड़े बच्चे छोटे बच्चों को उस विषय पर समझाएँ।
- कक्षा में समूहों के विचार साझा करें और शिक्षक दिशा-निर्देश दें।

**संसाधन:** वार्ता प्रश्न, चर्चा गाइड।

**मूल्यांकन:** सहकर्मी शिक्षण में सक्रिय भागीदारी और संवाद की गुणवत्ता।

**4. नैतिक बहस और संवाद** (Ethical Debate and Discussion) :

**उद्देश्य:** बच्चों में आलोचनात्मक सोच और नैतिक समझ विकसित करना।

**प्रक्रिया:**

- कक्षा में एक नैतिक विषय (जैसे – 'क्या हमेशा सच बोलना चाहिए?') चुनें।
- बच्चों को दो समूहों में बाँटें, एक पक्ष इस मुद्दे का समर्थन करे, दूसरा विरोध।
- समूह अपने तर्क तैयार करें और क्रमशः प्रस्तुत करें।

- बहस के बाद शिक्षक निष्कर्ष निकालें और महत्वपूर्ण बिंदुओं पर चर्चा करें।

  **संसाधन:** बहस के नियम, विषय-सूची।

  **मूल्यांकन:**बच्चों के तर्क, संवाद कौशल और सम्मानजनक व्यवहार।

**5. जीवन कौशल शिक्षा** (Life Skills Education) :

**उद्देश्य:** बच्चों को भावनात्मक और सामाजिक कौशल सिखाना।

**प्रक्रिया:**

- कक्षा में 'गुस्सा प्रबंधन' या 'सहानुभूति' जैसे विषय पर सत्र आयोजित करें।
- भूमिका-निर्धारण, समूह चर्चा और अभ्यास कराएं।
- बच्चों को दैनिक जीवन की स्थितियों में इन कौशलों के प्रयोग के लिए प्रोत्साहित करें।
- शिक्षक बच्चों के व्यवहार में सुधार को नोट करें और प्रतिक्रिया दें।

  **संसाधन:** रोल प्ले स्क्रिप्ट, वीडियो, चर्चा प्रश्न।

  **मूल्यांकन:** व्यवहार में बदलाव, सहपाठियों और शिक्षक की टिप्पणियाँ।

इन योजनाओं के माध्यम से शिक्षण अधिक प्रभावी और व्यावहारिक बनता है, जो बच्चों में मूल्यों के विकास के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करता है। NEP-2020 की सिफारिशों के अनुरूप ये पद्धतियाँ बच्चों को सक्रिय, जागरूक, और जिम्मेदार नागरिक बनाने में सहायक हैं।

8. **मूल्य विकास में आने वाली चुनौतियाँ**(Challenges in Value Development) :

बच्चों में सकारात्मक मूल्य विकास के मार्ग में कई प्रकार की चुनौतियाँ आती हैं, जिन्हें समझना और उनका समाधान निकालना अत्यंत आवश्यक है। NEP-2020 के संदर्भ में भी इन चुनौतियों को पहचान कर प्रभावी रणनीतियाँ अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया गया है। नीचे प्रमुख चुनौतियाँ और उनके प्रभावों का विवरण दिया गया है:

**1. आधुनिकता और पारंपरिक मूल्यों का टकराव :**

आज के समय में वैश्वीकरण, तेजी से बदलती तकनीक और मीडिया के प्रभाव से बच्चों के सामने पारंपरिक मूल्यों और आधुनिक सोच के बीच संघर्ष उत्पन्न होता है। उदाहरण के लिए, पारिवारिक संरचना और सामाजिक संस्कारों में बदलाव के कारण बच्चे कभी-कभी पारंपरिक अनुशासन और नैतिकता को अपनाने में कठिनाई महसूस करते हैं। सोशल मीडिया और लोकप्रिय संस्कृति के माध्यम से उन्हें अलग और कभी-कभी अस्वीकार्य व्यवहार भी देखने को मिलता है, जो मूल्य विकास में बाधक बन सकता है।

**2. परिवार और समाज में परिवर्तन :**

परिवार की भूमिका बच्चों के मूल्य निर्माण में सबसे महत्वपूर्ण होती है, लेकिन आधुनिक जीवनशैली, व्यस्तता, और संयुक्त परिवार के टूटने से पारिवारिक समर्थन में कमी आई है। एकल माता-पिता या दोनों माता-पिता के कामकाजी होने से बच्चों को आवश्यक नैतिक शिक्षा और मार्गदर्शन नहीं मिल पाता। साथ ही, समाज में सामाजिक बंधनों और परस्पर सहयोग की भावना कम होने से भी बच्चों में सहयोग, सहानुभूति जैसे मूल्यों का विकास प्रभावित होता है।

**3. तकनीकी युग में बच्चों का मानसिक एवं सामाजिक प्रभाव :**

डिजिटल उपकरणों, इंटरनेट और सोशल मीडिया का अत्यधिक प्रयोग बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य और

सामाजिक व्यवहार पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। उदाहरण के लिए, ऑनलाइन गेम्स, वर्चुअल दुनिया में व्यस्तता से बच्चे वास्तविक जीवन की सामाजिक जिम्मेदारियों से कट सकते हैं। साथ ही, इंटरनेट पर अप्रमाणित जानकारी और नकारात्मक कंटेंट बच्चों के नैतिक विकास में बाधा डालते हैं। ये प्रभाव बच्चों में असामाजिक व्यवहार, ध्यान में कमी, और भावनात्मक अस्थिरता भी ला सकते हैं।

**4. शिक्षक प्रशिक्षण और जागरूकता की कमी :**

मूल्य शिक्षा को प्रभावी बनाने के लिए शिक्षकों का समुचित प्रशिक्षण आवश्यक है। कई बार शिक्षक नैतिक और सामाजिक मूल्यों को पढ़ाने में पर्याप्त कौशल या जागरूकता नहीं रखते, जिससे मूल्य आधारित शिक्षा अधूरी रह जाती है। शिक्षक स्वयं यदि मॉडलिंग में कमजोर हों तो बच्चों पर सकारात्मक प्रभाव डालना कठिन हो जाता है। इसलिए, शिक्षकों के लिए विशेष कार्यशालाएँ, सेमिनार और प्रशिक्षण कार्यक्रम आवश्यक हैं।

**5. मूल्य आधारित शिक्षा की निगरानी एवं मूल्यांकन की कठिनाइयाँ:**

मूल्य शिक्षा का प्रभाव मापना और उसका नियमित मूल्यांकन करना चुनौतीपूर्ण होता है क्योंकि यह मात्र शैक्षिक परिणामों की तरह मात्रात्मक नहीं होता। बच्चों के व्यवहार और मनोवृत्ति में आए परिवर्तन को मापने के लिए उचित उपकरण और मानक विकसित करना आवश्यक है। कई विद्यालयों में मूल्य शिक्षा के लिए प्रभावी निगरानी तंत्र और फीडबैक प्रणाली की कमी होती है, जिससे सुधार के अवसर सीमित रह जाते हैं।

मूल्य विकास की इन चुनौतियों को समझकर और उनके समाधान पर कार्य करके ही बच्चों में सशक्त नैतिक और सामाजिक मूल्य स्थापित किए जा सकते हैं। NEP-2020 भी इन बाधाओं को पहचानते हुए शिक्षा प्रणाली में समुचित सुधार और सहयोगी प्रयासों की आवश्यकता पर बल देती है, ताकि बच्चों का समग्र विकास सुनिश्चित किया जा सके।

9. **सुझाव एवं निष्कर्ष** (Suggestions and Conclusion) :

**1. शिक्षक प्रशिक्षण में मूल्य शिक्षा को अनिवार्य बनाएं:**

शिक्षकों के लिए नियमित और विशेष कार्यशालाएँ आयोजित करें जहाँ वे मूल्य शिक्षा के सिद्धांत, नवीनतम शिक्षण तकनीकें, और बच्चों में नैतिकता विकसित करने के तरीकों को सीखें। प्रशिक्षण में वास्तविक जीवन के उदाहरण और केस स्टडी शामिल हों ताकि शिक्षक अधिक प्रभावी मॉडलिंग कर सकें।

**2. पाठ्यक्रम और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में मूल्य शिक्षा को अनिवार्य करें :**

स्कूल के पाठ्यक्रम में नैतिक कहानियों, जीवन कौशल विषयों को जोड़ें। सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ जैसे नाटक, कहानी सुनाना, पर्यावरण अभियान, और सामाजिक सेवा को नियमित रूप से आयोजित करें, जिससे बच्चे मूल्य व्यवहार में समझें और अपनाएं।

**3. अभिभावकों को मूल्य शिक्षा में सक्रिय रूप से शामिल करें:**

अभिभावकों के लिए कार्यशालाएँ और बैठकें आयोजित करें, जहाँ उन्हें बच्चों के मूल्य विकास में उनकी भूमिका के बारे में जागरूक किया जाए। घर में सकारात्मक व्यवहार के उदाहरण देने के लिए अभिभावकों को प्रेरित करें।

**4. स्कूल और समुदाय के बीच समन्वय बढ़ाएं :**

समुदाय के सदस्यों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, और स्थानीय संगठनों को स्कूल कार्यक्रमों में शामिल करें। सामुदायिक सेवा, सांस्कृतिक मेलों और स्वच्छता अभियानों में बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित करें, जिससे वे

सामाजिक जिम्मेदारी समझें।

**5. डिजिटल मीडिया का नियंत्रित और सकारात्मक उपयोग सुनिश्चित करें :**

स्कूल और परिवार दोनों मिलकर बच्चों को डिजिटल उपकरणों के सही उपयोग के लिए मार्गदर्शन दें। साइबर सुरक्षा, इंटरनेट एथिक्स, और डिजिटल सम्मान पर नियमित शिक्षण कार्यक्रम चलाएं। अनावश्यक या हानिकारक कंटेंट से बचाव के लिए नियंत्रण उपकरणों का प्रयोग करें।

**6. मूल्य शिक्षा का प्रभाव मापने के लिए नियमित मूल्यांकन प्रणाली बनाएं:**

विद्यालयों में बच्चों के व्यवहार, सामाजिक सहभागिता और नैतिक निर्णयों का आकलन करने के लिए प्रभावी और व्यावहारिक मूल्यांकन उपकरण विकसित करें। इस डेटा के आधार पर सुधारात्मक कदम उठाएं और शिक्षक एवं अभिभावकों को नियमित फीडबैक दें।

**7. बच्चों को जीवन कौशल सिखाने पर जोर दें :**

समय प्रबंधन, समस्या समाधान, संचार कौशल, और भावनात्मक नियंत्रण जैसे जीवन कौशलों को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाएं। इन कौशलों को सीखने के लिए रोल प्ले, समूह चर्चा, और प्रोजेक्ट आधारित शिक्षण अपनाएं।

**8. स्कूल में एक सकारात्मक और सुरक्षित वातावरण बनाएं :**

शिक्षक और कर्मचारी ऐसे वातावरण का निर्माण करें जहाँ बच्चे बिना डर के अपने विचार व्यक्त कर सकें, गलती कर सकें, और सीख सकें। इस वातावरण में सम्मान, सहयोग और समानता के मूल्य स्वयं ही विकसित होते हैं।ये सुझाव व्यवहारिक रूप से स्कूल, परिवार और समुदाय में लागू किए जा सकते हैं ताकि बच्चों में नैतिक और सामाजिक मूल्यों का विकास ठोस और दीर्घकालिक हो। NEP-2020 की यह दिशा भी इसी समग्र दृष्टिकोण को बढ़ावा देती है।

**उपसंहार :**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 बच्चों में मूल्य विकास को शिक्षा का केंद्रीय उद्देश्य मानती है, जो उनके व्यक्तित्व, नैतिकता और सामाजिक जिम्मेदारी को सुदृढ़ करता है। मूल्य शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित न रहकर अनुभवात्मक, सहभागी और जीवन-कौशल आधारित होनी चाहिए, जिससे बच्चे सहानुभूति, ईमानदारी, सहयोग और अनुशासन जैसे गुण आत्मसात कर सकें। पूर्व के शोध स्पष्ट करते हैं कि परिवार, विद्यालय और समुदाय के सामूहिक प्रयास से ही स्थायी मूल्य विकास संभव है। डिजिटल युग में सही मार्गदर्शन के साथ तकनीकी साधनों का उपयोग इस प्रक्रिया को और प्रभावी बना सकता है, जिससे संवेदनशील और जिम्मेदार नागरिक तैयार हों।

10. **संदर्भ** (References) :


1. डेविड, एम. (2010). *बच्चों में नैतिक विकास हेतु अनुभवात्मक अधिगम रणनीतियाँ.* शिक्षा एवं मूल्य, 5(1), 23–34।
2. गुप्ता, आर., एवं कुमारी, पी. (2017). *विद्यालय आधारित मूल्य शिक्षा कार्यक्रम एवं उनका विद्यार्थियों पर प्रभाव.* शैक्षिक विकास पत्रिका, 12(3), 45–58।
3. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय. (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020.* नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार। उपलब्ध:

https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_HINDI_0.pdf (पृ. 1–66)।

4. कोहलबर्ग, एल. (1984). *नैतिक विकास का मनोविज्ञान: नैतिक चरणों की प्रकृति और वैधता.* हार्पर एंड रो।
5. कुमार, एस. (2019). *डिजिटल युग में मूल्य शिक्षा: चुनौतियाँ और संभावनाएँ.* अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा एवं सामाजिक विज्ञान पत्रिका, 7(2), 101–110।
6. पटिल, ए., एवं मोरे, वि. (2021). *विद्यालयों में मूल्य शिक्षा हेतु सहभागी शिक्षण पद्धतियाँ.* शैक्षिक अनुसंधान समीक्षा, 15(1), 77–89।
7. पियाजे, जे. (1932). *बालक का नैतिक निर्णय.* रूटलेज एंड केगन पॉल।
8. राज, पी., एवं देशमुख, म. (2022). *बच्चों में मूल्य विकास हेतु सामाजिक एवं भावनात्मक अधिगम.* भारतीय बाल विकास पत्रिका, 18(4), 210–225।
9. रॉजर्स, सी. आर. (1969). *सीखने की स्वतंत्रता.* मेरिल।
10. मास्लो, ए. एच. (1970). *प्रेरणा और व्यक्तित्व* (2रा संस्करण)। हार्पर एंड रो।
11. स्किनर, बी. एफ. (1974). *व्यवहारवाद के बारे में.* विंटेज बुक्स।
12. सिंह, ए., एवं शर्मा, के. (2015). *बच्चों के मूल्य विकास में परिवार की भूमिका.* भारतीय शैक्षिक समीक्षा, 53(2), 67–82।
13. हॉफमैन, एम. एल. (2000). *सहानुभूति और नैतिक विकास: देखभाल और न्याय के निहितार्थ.* कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।